समीक्षा

पुस्तक समीक्षा एवं शोध की श्रेष्ठ त्रैमासिक पत्रिका
जनवरी-मार्च 2013 वर्ष : 45 अंक-4

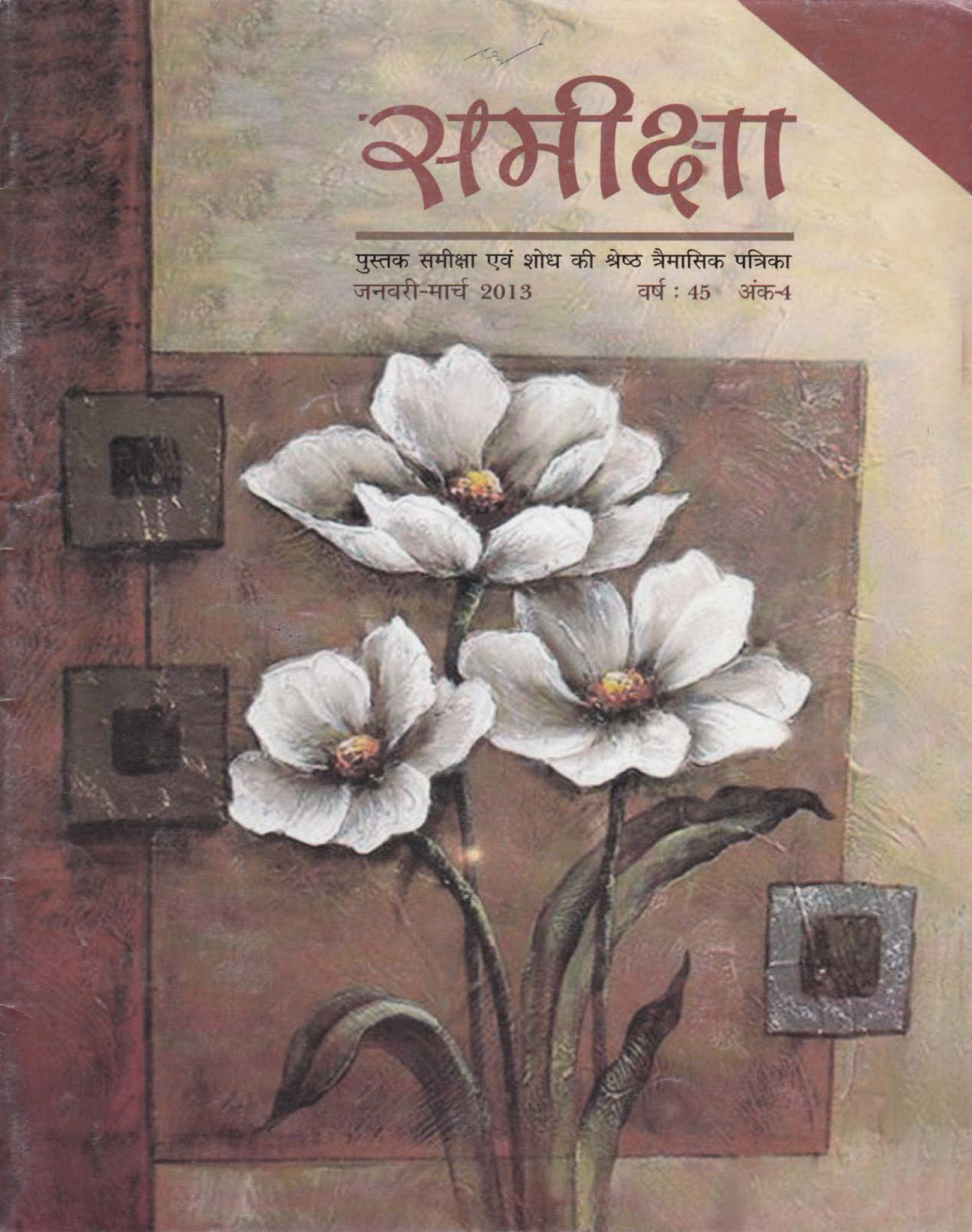

सामयिक प्रकाशन :

केन्द्रीय हिंदी संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार द्वारा सम्मानित प्रकाशक

प्रख्यात कथाकार एवं व्यास सम्मान से सम्मानित

चित्रा मुद्गल
की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

'आवां'
उपन्यास
सातवां संस्करण
आकार : डिमाई
पृष्ठ : 544
₹ 600

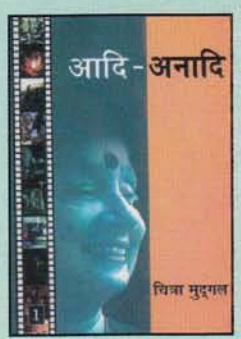

'आदि-अनादि'
चित्रा मुद्गल की
संपूर्ण कहानियां
(3 खंड)
तीसरा संस्करण
आकार : डिमाई
पृष्ठ : 816
₹ 900

'चर्चित कहानियां'
कहानी
तीसरा संस्करण
आकार : डिमाई
पृष्ठ : 160
₹ 150

'गिलिगडु'
उपन्यास
पांचवां संस्करण
आकार : डिमाई
पृष्ठ : 144
₹ 200

'तहखानों में बंद अक्स'
कथात्मक रिपोर्ताज
दूसरा संस्करण
आकार : डिमाई
पृष्ठ : 208
₹ 300

'एक जमीन अपनी'
उपन्यास
चौथा संस्करण
आकार : डिमाई
पृष्ठ : 272
₹ 300

'ब्यार उनकी मुट्ठी में'
समाज
आकार : डिमाई
पृष्ठ : 144
₹ 150

सामयिक प्रकाशन : समस्त पुस्तकों के 1 सेट का मूल्य ₹ 1,50,000 से भी अधिक

समीक्षा

पुस्तक समीक्षा एवं शोध की श्रेष्ठ त्रैमासिक पत्रिका

जनवरी-मार्च, 2013

वर्ष : 45, अंक : 4

संपादक

सत्यकाम

प्रबंध संपादक

महेश भारद्वाज

प्रबंध कार्यालय

सामयिक प्रकाशन
3320-21 जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोनः 011-23282733; टेलीफैक्स : 011-23270715
E-mail: samayikprakashan@gmail.com
samikshaquaterly@gmail.com

संपादकीय कार्यालय

संपादक समीक्षा
एच-2, यमुना, इग्नू, मैदानगढ़ी,
नई दिल्ली-110068
फोन : 011-29533534
E-mail: satyakamji@gmail.com

समीक्षा

जनवरी-मार्च, 2013

वर्ष : 45, अंक : 4

प्रकाशन तिथि : 15 मार्च, 2013

संस्थापक संपादक : गोपाल राय

सहायक संपादक : अमिताभ राय

सहायक प्रबंध कार्यालय : हेमचन्द्र पन्त

सहयोग राशि

मूल्य ₹ 30 *(बिना डाक खर्च के)*

डाक द्वारा भेजी जाने वाली पत्रिका

मूल्य ₹ 50

व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए

वार्षिक ₹ 200 त्रैवार्षिक ₹ 600 आजीवन ₹ 2000

संस्थाओं के लिए

वार्षिक ₹ 300 त्रैवार्षिक ₹ 900 आजीवन ₹ 3000

निवेदन

- कृपया सारे भुगतान मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा '**समीक्षा**' के नाम (देय दिल्ली-नई दिल्ली) से किए जाएं।
- मनीऑर्डर के कूपन पर प्रेषित धन राशि और प्रेषक का नाम-पता अवश्य लिखें।
- पत्रिका का कोई अंक न मिलने पर उसकी सूचना **प्रबंध कार्यालय** को शीघ्र दें।
- पत्रिका के मूल्य/बिल का भुगतान बैंक ड्राफ्ट द्वारा यथाशीघ्र करें।

'**समीक्षा**' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं।

- संपादक, सहायक संपादक अवैतनिक, अव्यावसायिक रूप से मात्र साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म में सहयोगी।
- समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय में विचारणीय।

- आवरण : निर्दोष त्यागी, कल्याणी कम्प्यूटर सर्विसेज, नई दिल्ली द्वारा लेजर कंपोजिंग एवं रुचिका प्रिंटर्स, शाहदरा दिल्ली द्वारा मुद्रित।

SAMIKSHA

A quaterly journal of Book Reviews & Research in Hindi
Published by SAMAYIK PRAKASHAN, 3320-21, Jatwara, N.S. Marg, Daryaganj, New Delhi-110002
E-mail : samikshaquaterly@gmail.com

समीक्षा
पुस्तक समीक्षा एवं शोध की श्रेष्ठ त्रैमासिक पत्रिका

जनवरी-मार्च, 2013
वर्ष : 45, अंक 4

अनुक्रम

	संपादकीय	*सत्यकाम*	5
साक्षात्कार	विद्या का अनुशासन मैं पूरी तरह पालन नहीं कर पाता : विश्वनाथ त्रिपाठी	*वेंकटेश कुमार*	6
जीवनी	केवल जीवनी नहीं, एक इतिहास भी है *(व्योमकेश दरवेश / विश्वनाथ त्रिपाठी)*	*सत्यकाम*	11
साक्षात्कार	लमही सम्मान मेरे लिए एक मील का पत्थर है : मनीषा कुलश्रेष्ठ	*ईशिता सिद्धार्थ*	17
कहानी	मानवीय जीवन एवं संबंधों की परत-दर-परत उधेड़ती कहानियां *(गंधर्व-गाथा / मनीषा कुलश्रेष्ठ)*	*स्वाति तिवारी*	20
संस्मरण	संतूर : मेरा जीवन संगीत *(संतूरः मेरा जीवन संगीत / शिवकुमार शर्मा एवं ईना पुरी)*	*भारत भूषण जोशी*	22
संस्मरण	दो संस्मरणात्मक पुस्तकें *(क्या कहूं, क्या न कहूं, / शीला इन्द्र आओ नैनीताल चलें / कृष्णा कुमारी)*	*वीरेन्द्र सक्सेना*	25
पत्रकारिता	पहला संपादकीय *(पहला संपादकीय / विजयदत्त श्रीधर)*	*कुमुद शर्मा*	28
उपन्यास	भूभल : कथ्य और तथ्य का हृदय विदारक विश्लेषण *(भूभल / मीनाक्षी स्वामी)*	*पुरुषोत्तम दुबे*	30
उपन्यास	शुद्ध एवं संपूर्ण अनुवाद : शरत के उपन्यासों के संदर्भ में *(देवदास / शरत चंद्र; श्रीकांत / शरतचंद्र)*	*अरुण होता*	32
उपन्यास	सामाजिक संघर्ष की गाथा *(हिरनी-बिरनी / मृदुला शुक्ला)*	*राजेश राव*	35
उपन्यास	परिमित से अपरिमित की ओर *(जयगाथा / मधुकर गंगाधर)*	*अरविन्द अवस्थी*	37

उपन्यास	जीवन की जटिल स्थितियों का विस्तार *(कथा सनातन / रमेशचंद्र शाह;* *पोटली / द्रोणवीर कोहली;* *स्वर्णमृग / गिरिराज किशोर)*	*महाबीर रवांल्टा*	38
कहानी	जिंदगी की आपाधापी की रचनात्मक अभिव्यक्ति *(एक बड़ा सवाल / शीला इन्द्र)*	*हरेकृष्ण तिवारी*	41
कहानी	दोहरे मानदंडों से जूझती धरती की परियां *(आओ मां! हम परी हो जाएं / रोहिणी अग्रवाल)*	*मधु संधु*	43
कहानी	जीवन की जटिलताओं में सादगी से प्रवेश *(शुभारंभ और अन्य कहानियां / ओमा शर्मा)*	*राकेश शुक्ल*	45
आलोचना	प्रेमचंद की विरासत और गोदानः किसान जीवन की त्रासद गाथा का पुनर्पाठ *(प्रेमचंद की विरासत और गोदान / शिवकुमार मिश्र)*	*पूनम सिन्हा*	47
आलोचना	निराला के गद्यकार रूप की परख *(निराला का गद्य और भारतीय समाज / ममता तिवारी*	*अनिल राय*	50
कविता	गहन मानवीय विमर्श का यत्न *(खबरें और अन्य कविताएं / गंगाप्रसाद विमल)*	*ज्योतिष जोशी*	52
कविता	सामाजिक विसंगतियों से जूझती कविताएं *(कुछ दूर रेत पर चलकर / वरुण कुमार तिवारी* *अलाव जल रहा है / वसंत कुमार परिहार)*	*कृष्ण शलभ*	54
कविता	बुद्ध का मजाक बना, बुद्ध मुस्कुराये *(बुद्ध मुस्कराये / यश मालवीय)*	*श्रीकांत सिंह*	56
व्याकरण/ साक्षात्कार	समीक्षा में सृजन *(सृजन और समीक्षा/ व्यासमणि त्रिपाठी;* *साधना से संवाद / प्रेमकुमार)*	*अरविन्द अवस्थी*	58
साहित्य सर्वेक्षण	2012 का साहित्य : एक लेखा-जोखा	*अमिताभ राय*	59

संपादकीय

❑ *सत्यकाम*

2012 बीत गया! 2013 वर्तमान है। पर अंत होते-होते रूला गया। जिस बर्बरता और अमानुषिकता के साथ इस वर्ष का अंत हुआ...लगता है आगे कुछ कहने-सुनने को बचा ही नहीं। इस नृशंसता के खिलाफ 'हम' की जो आवाज गूंजी उससे पूरा देश चैतन्य हो उठा। जनता की इस जागरूकता ने राजनीति के गलियारे में हलचल मचा दी। स्त्रियों पर लगातार होते हमले भारतीय समाज की आधुनिकता पर प्रश्न चिह्न लगा गई। बहस छिड़ गई और स्त्री विरोधी, सामंती, दकियानूसी और रूढ़िवादी मानसिकता का जमकर विरोध हुआ। उस तथाकथित संस्कार की चिता जलाई गई, जिसके नागपाश में स्त्रियों को बांधने का षड्यंत्र आज भी किया जाता है। कहा गया स्त्रियों के प्रति हमारा यह दृष्टिकोण आज हमारा सबसे बड़ा शत्रु बन गया स्त्रियों की आजादी और सुरक्षा के लिए साहित्य से लेकर मीडिया तक में आवाज उठने लगी। सब हुआ। हम हिले। हम चुप हुए। सत्ता की संवेदनहीनता कायम रही। लीपापोती करने का प्रयास जारी है। बलात्कार जारी है। स्त्रियों के खिलाफ हिंसा जारी है और हम चुप हैं।

साहित्य लगातार स्त्री वेदना और पीड़ा व्यक्त करता रहा। समय बदलता गया तेवर भी बदले पर नहीं बदली 'मानसिकता'। साहित्य में जिस स्त्री स्वतंत्रता की बात की जाती है और उषा प्रियंवदा से लेकर आज की महिला लेखिकाएं जिस प्रकार स्त्रियों के अस्तित्व को लेकर जोरदार बहस कर रही हैं उसका हश्र क्या हुआ। क्या पुरुष मानसिकता पितृसत्तात्मकता व्यवस्था पर उसका कोई प्रभाव पड़ा है? रोज सुबह सैर को जाता हूं और एक रोज जैसे ही मैं सैर पर निकला तो कुछ महिलाएं आपस में इस प्रकार बात कर रही थीं कि अरे फलाने की बहू अपने पति, अपने परिवार और अपनी मर्यादा का ख्याल नहीं रखती। फलाने के बीबी बिना सिर पर दुपट्टा लिए निकलती है। फलाने की बेटी के कपड़े देखो। कोई शर्म-हया नहीं। यह मानसिकता आज भी हमारे समाज में, हमारे परिवार में हमारे परिवेश में गहरे जड़ जमाए बैठी है। हम बात तो करते हैं आधुनिकता की परंतु स्त्रियां अभी भी पितृसत्तात्मक मानसिकता से मुक्त नहीं हो पाई हैं। इस आंदोलन के दौरान साहित्यकारों की तटस्थता पर लंबी बहस चली और लेखकों की तटस्थता को एक अपराध के रूप में देखा गया। साहित्य में तो पित्तृसत्तात्मकता के खिलाफ जेहाद छिड़ा है पर समाज में उसकी परिणति कम दिखती है।

महिला कथाकारों का एक बड़ा हुजूम पिछले दशक में सामने आया है जो स्त्रियों की मनःस्थिति और उनके संघर्ष को कथा का विषय बना रहा है। मनीषा कुलश्रेष्ठ, अल्पना मिश्र, वंदना राग, जयश्री रॉय, कविता, ज्योति चावला, नीलाक्षी सिंह और शरद सिंह जैसी कथाकार स्त्री मन को एक नए अंदाज में और एक नए तेवर के साथ प्रस्तुत कर रही हैं। अपने पूर्ववर्ती कथाकारों की तरह नवोदित महिला कथाकार भी लगातार पुरुष मानसिकता के वर्चस्व को चुनौती दे रही हैं। लेकिन सवाल वहीं खड़ा है कि क्या यह चुनौती साहित्य तक ही सीमित है या फिर समाज पर इस साहित्य का कोई प्रभाव भी पड़ रहा है?

इस अंक में हिंदी की युवा कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ का साक्षात्कार और उनकी पुस्तक 'गंधर्व गाथा' की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है। एक लेखिका अपनी रचना के माध्यम से किस प्रकार समाज से जूझ रही है यह इसका स्पष्ट उदाहरण है।

क्लासिक कृतियां कभी-कभी ही लिखी जाती हैं। वरिष्ठ रचनाकार विश्वनाथ त्रिपाठी ने अपने गुरु पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी की जीवनी 'व्योमकेश दरवेश' लिखी है जो इस दशक की एक उपलब्धि है। उनका साक्षात्कार इस अंक में शामिल है और 'व्योमकेश दरवेश' की समीक्षा भी। रचना और रचनाकार को जानने समझने के लिए लेखक और कृति से रू-ब-रू होना दिलचस्प होगा।

इस अंक में उपन्यास, कहानी, संस्मरण, जीवनी, कविता, आलोचना से संबंधित पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत है जो यह बताती है कि हिंदी का रचना संसार लगातार समृद्ध होता जा रहा है। इस अंक में 2012 में प्रकाशित प्रमुख पुस्तकों पर आधारित सर्वेक्षण लेख भी पेश ए खिदमत है जिससे हिंदी के रचना संसार की गतिविधि की एक झलक मिलती है। 'पुस्तक समीक्षा' आलोचना का अवलंब है और समीक्षा कृतियों को सामने रखती है, उन्हें निकष पर कसती है और छलनी से छानती भी है।

श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद पर सुशोभित होने के लिए समीक्षा परिवार की ओर से बधाई और शुभकामना।

ओम थानवी और नरेश सक्सेना को शमशेर सम्मान मिला। चंद्रकांत देवताले साहित्य अकादमी के पुरस्कार से नवाजे गए और युवा कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ को लमही सम्मान मिला। समीक्षा परिवार की ओर से उन्हें ढेर सारी बधाइयां।

हिंदी अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. मुकुंद द्विवेदी का 11 फरवरी 2013 को देहावसान हो गया। समीक्षा परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि, नमन।

विद्या का अनुशासन मैं पूरी तरह पालन नहीं कर पाता : विश्वनाथ त्रिपाठी

वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी से वेंकटेश कुमार की बातचीत

❑ *वेंकटेश कुमार*

वेंकटेश कुमार : यह बातचीत मुख्य रूप से आपकी किताब 'व्योमकेश दरवेश' पर केंद्रित रहेगी। तो इस संदर्भ में पहली बात जो आपसे जानना चाहूंगा, वह यह कि कई लोगों ने इस किताब के बारे में यह धारणा बना ली है कि इसमें त्रिपाठीजी ने अपने गुरुदेव का वंदन किया है, लेकिन इस किताब में कई ऐसे प्रसंग हैं, जहां आपने द्विवेदीजी की आलोचना की है या अप्रिय प्रसंगों की भी तटस्थ होकर चर्चा की है। तो आपको यह लिखना जरूरी क्यों लगा कि "मैं अपने गुरुदेव पर तटस्थ होकर नहीं लिख सकता?"

विश्वनाथ त्रिपाठी : सबसे पहले तो मैं यह कहूं कि मुझे ऐसे तटस्थ प्रश्न की आशा नहीं थी। लगता है कि प्रश्नकर्ता ने बहुत ध्यान से मेरी किताब पढ़ी है। जो श्रद्धा होती है और जो सम्मान होता है, अगर वो सच है तो वो आदमी को निर्भीक और स्पष्टवादी भी बनाता है। तुम जिससे प्रेम करते हो, उससे डरते नहीं हो। दूसरी बात, मैं तुमको कभी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की एक घटना सुनाता हूं और वो घटना आचार्य रामचंद्र शुक्ल के समय की है। जो विदाई-समारोह हो रहा था तो उसमें किसी ने कहा हमारे गुरुओं की जो आलोचना होती है, उसका हमें मुंहतोड़ उत्तर देना चाहिए, तो आचार्य शुक्ल ने कहा कि तुम लोग अपनी पढ़ाई-लिखाई का काम करो, अपने गुरुओं की रक्षा करने में समय नष्ट मत करो। अगर तुम्हारे गुरु कच्ची मिट्टी के बने हैं तो कहां तक उन पर छाता लगाते घूमते रहोगे और अगर वो मजबूत हैं, तब भी उनकी रक्षा करने की जरूरत नहीं है। तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की जो हमने आलोचना की है या जो भी हमने उनके कुछ कामों को बताया है कि उचित नहीं था, उसके पीछे वो मेरा उनके सदाचार और नैतिकता पर अगाध विश्वास है, इसलिए कहा है मैंने। मेरा पूरा भरोसा है कि इन बातों से पंडितजी का जो शील है, उस पर कोई खरोंच नहीं आती है। तो पंडितजी की जो कमियां थीं, उसको छुपाने की जरूरत नहीं थी मुझे। जहां तक तटस्थ होने का सवाल है तो तटस्थ न होने का यह भी मतलब नहीं है कि आदमी बेईमान और झूठा हो जाए। देखो, जो लेखन-प्रक्रिया होती है, उसमें ऐसा नहीं होता कि आप संकल्प करके चलते हैं, वही पूरा करते हैं, न विचारधारा में सर्वत्र संगति बनी रहती है और न ही उद्देश्य में। इसको अमेरिकन आलोचना में 'इंडेसनल फेंटेसी' कहते हैं, आप कहना चाहते हैं कुछ, हो जाता है कुछ। तो जहां कोई ऐसा प्रसंग आ गया तो ऐसा थोड़े है कि मैं इतना तटस्थ हो जाऊंगा कि सच्ची बात छिपा लूं।

वेंकटेश कुमार : लेकिन द्विवेदीजी की कोई कटु आलोचना करे, यह भी आपको बर्दाश्त नहीं। इसके लिए आपने अपने दो गुरुओं-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और जगन्नाथ प्रसाद शर्मा की कटु आलोचना की है और अपने जिस गुरुदेव के बारे में आपने कभी लिखा था कि 'हक अदा न हुआ' उसी गुरुदेव के भाई को यह नसीहत देना न भूले कि 'काशीनाथ सिंह अगर एक संस्मरण सहारा ऑफिस में नामवर सिंह लिखने का प्रयास करते तो ये सब बातें उन्हें सूझतीं'। मुझे हिंदी के एक वरिष्ठ लेखक ने बताया कि नामवर का आर्थिक पक्ष कमजोर है और वे घूम-घूमकर जो व्याख्यान देते हैं, उससे उन्हें कुछ आर्थिक मदद भी मिल जाती है।

विश्वनाथ त्रिपाठी : क्योंकि तुमने किताब ध्यान से पढ़ी है, ऐसा मुझे तुम्हारी बात से लगता है। तो तुम खुद देखोगे कि पंडितजी की जो आलोचना की गई है, वो क्या की गई है। पहले ये पता लगाओ न कि पंडितजी की क्या आलोचना की गई है और इस पर क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए। तुम ये नहीं बता पाओगे इस समय कि पंडितजी की क्या आलोचना की है। पंडितजी की एक आलोचना तो यह की गई कि उन्होंने आचार्य रामचंद्र शुक्ल का विरोध किया तो रामचंद्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी के संबंधों को अब और अच्छे से समझा जा सकता है, रामविलास शर्मा और नामवर सिंह के विवाद के बाद। रामचंद्र शुक्ल हिंदी के श्रेष्ठ आलोचक थे और इतिहासकार भी श्रेष्ठ ही हैं, लेकिन उनका जो पूरा ढांचा है, वो मुख्य रूप से सगुण भक्ति और सवर्ण ढांचा है। रामचंद्र शुक्ल के लोक में जो नाथ-सिद्ध है और जो